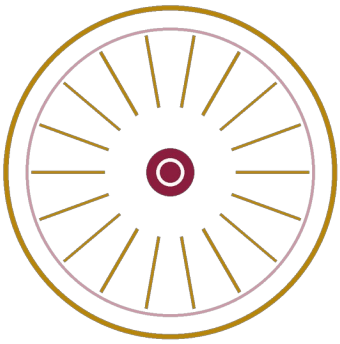

अध्याय 16: दैवासुरसम्पद्विभागयोग

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **16.01**

श्रीभगवानुवाच |

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः |

दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् || **01** ||

हिन्दी अनुवाद:

श्रीभगवान बोले—अभय (भय का पूरी तरह से न होना), अंतःकरण की पूर्ण पवित्रता, ज्ञान और योग में निरंतर स्थिति, दान, इन्द्रियों का दमन, यज्ञ, स्वाध्याय (शास्त्रों का अध्ययन), तप और सरलता।

सरल व्याख्या:

श्रीकृष्ण यहाँ से दैवी संपदा (दैवीय गुणों) की व्याख्या शुरू करते हैं। पहला गुण है 'अभय' यानी सत्य के मार्ग पर चलते हुए निर्भय रहना। इसके साथ ही मन की शुद्धि, ज्ञान साधना में निष्ठा, निस्वार्थ दान, अपनी इन्द्रियों पर संयम, स्वाध्याय और व्यवहार में छल-कपट रहित सरलता—ये सब मनुष्य को दिव्य चेतना की ओर ले जाते हैं।

यह श्लोक हमें बताता है कि... भयमुक्त होना और मन को पवित्र रखकर सरलता से जीवन जीना ही दैवीय जीवन शैली की पहली नींव है।

श्लोक संख्या: **16.02**

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् |

दया भूतेष्वलोलुपत्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् || **02** ||

हिन्दी अनुवाद:

अहिंसा (किसी जीव को दुख न देना), सत्य, क्रोध न करना, त्याग, शांति, चुगली न करना (किसी की निंदा न करना), सब प्राणियों पर दया, विषयों में न ललचाना (अलोलुपता), कोमलता, लज्जा (गलत काम करने से संकोच) और चंचलता का न होना।

सरल व्याख्या:

भगवान दैवी संपदा के अगले गुणों को गिनाते हैं। मन, वाणी या कर्म से किसी को कष्ट न पहुँचाना, सदा सत्य बोलना, विपरीत परिस्थिति में भी क्रोध न करना, दूसरों की निंदा या चुगली करने से बचना, सभी जीवों के प्रति दया भाव रखना और व्यर्थ की चंचलता छोड़कर शांत रहना—ये सब एक महान चरित्र के लक्षण हैं।

यह श्लोक हमें बताता है कि... वाणी का सत्य, मन की शांति और सभी जीवों के प्रति दया ही व्यक्ति के आत्मिक विकास का सच्चा मापदंड है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **16.03**

> तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता |
> भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत || **03** ||

हिन्दी अनुवाद:

तेज, क्षमा, धैर्य, बाहर-भीतर की शुद्धि, किसी में द्रोह (शत्रुता) भाव का न होना और अपने में पूज्यता के अभिमान का न होना—हे भारत! ये सब दैवी संपदा को लेकर उत्पन्न हुए पुरुष के लक्षण हैं।

सरल व्याख्या:

दैवी गुणों का समापन करते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं कि जिस व्यक्ति के भीतर आत्मिक प्रभाव (तेज), दूसरों को क्षमा करने का सामर्थ्य, कठिन समय में धैर्य, पवित्रता, किसी के प्रति वैर भाव न होना और खुद को बहुत बड़ा न समझने की नम्रता होती है, वह व्यक्ति दैवीय संस्कारों के साथ जन्मा माना जाता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... अहंकार से मुक्ति, क्षमाशीलता और आंतरिक स्वच्छता ही मनुष्य को ईश्वर के निकट लाती है।

श्लोक संख्या: **16.04**

> दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च |
> अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम् || **04** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे पार्थ! दंभ (पाखंड), दर्प (घमंड), अभिमान, क्रोध, कठोरता (निर्दयता) और अज्ञान—ये सब आसुरी (आसुरी प्रवृत्तियों वाली) संपदा को लेकर उत्पन्न हुए पुरुष के लक्षण हैं।

सरल व्याख्या:

अब भगवान 'आसुरी संपदा' यानी नकारात्मक गुणों का वर्णन करते हैं। दिखावा करना (दंभ), अपनी संपत्ति या ज्ञान का घमंड करना (दर्प), स्वयं को दूसरों से श्रेष्ठ समझना, बात-बात पर गुस्सा होना, कटु और कठोर वचन बोलना तथा सही-गलत का ज्ञान न होना—ये सब लक्षण व्यक्ति को पतन की ओर ले जाते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... पाखंड, अहंकार और क्रोध ही मनुष्य के भीतर के आसुरी स्वभाव को जाग्रत करते हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **16.05**

> दैवी सम्पद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता |
> मा शुचः सम्पदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव || **05** ||

हिन्दी अनुवाद:
दैवी संपदा मुक्ति के लिए मानी गई है और आसुरी संपदा बंधन के लिए मानी गई है; इसलिए हे पाण्डव! तुम शोक मत करो, क्योंकि तुम दैवी संपदा को लेकर उत्पन्न हुए हो।

सरल व्याख्या:
श्रीकृष्ण अर्जुन को आश्वस्त करते हैं कि दैवीय गुण मनुष्य को दुःखों और जन्म-मरण के बंधन से मुक्त करते हैं, जबकि आसुरी गुण इंसान को संसार के मोह-माया और कष्टों में बाँधते हैं। कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि तुम्हारा स्वभाव जन्म से ही दैवीय गुणों से युक्त है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... हमारे सद्गुण ही हमारी परम मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं, जबकि दुर्गुण हमें दुःखों में बाँधते हैं।

श्लोक संख्या: **16.06**

> द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च |
> दैवो विस्तृतशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु || **06** ||

हिन्दी अनुवाद:
हे पार्थ! इस संसार में प्राणियों की सृष्टि दो ही प्रकार की है—एक दैवी और दूसरी आसुरी। उनमें से दैवी स्वभाव का विस्तार से वर्णन किया गया, अब तुम आसुरी स्वभाव को मेरे से विस्तारपूर्वक सुनो।

सरल व्याख्या:
भगवान कहते हैं कि इस दुनिया में केवल दो ही तरह की प्रवृत्तियां या मानसिक संरचनाएं पाई जाती हैं—एक सकारात्मक/दैवीय और दूसरी नकारात्मक/आसुरी। दैवीय गुणों को बताने के बाद, अब श्रीकृष्ण आसुरी प्रवृत्तियों की बारीकियों को समझाते हैं ताकि मनुष्य उनसे बच सके।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... बुराई के लक्षणों को पहचानना भी उतना ही आवश्यक है जितना कि अच्छाई को अपनाना, ताकि हम पतन से बच सकें।

Satyanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **16.07**

> प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः |
> न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते || **07** ||

हिन्दी अनुवाद:

आसुरी प्रवृत्ति वाले मनुष्य यह नहीं जानते कि किस कार्य में प्रवृत्ति होनी चाहिए (क्या करना चाहिए) और किस कार्य से निवृत्त होना चाहिए (क्या नहीं करना चाहिए)। उनमें न तो शुद्धि होती है, न श्रेष्ठ आचरण होता है और न ही सत्य होता है।

सरल व्याख्या:

आसुरी स्वभाव के लोगों की मुख्य पहचान यह है कि उनका विवेक नष्ट हो चुका होता है। वे यह भेद नहीं कर पाते कि धर्म क्या है और अधर्म क्या। उनके जीवन में न तो स्वच्छता (मानसिक या शारीरिक) होती है, न आचार-विचार की मर्यादा होती है और न ही वे सत्य का आचरण करते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... सही और गलत के विवेक का खो जाना ही आसुरी जीवन शैली की शुरुआत है।

श्लोक संख्या: **16.08**

> असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् |
> अपरस्परसम्भूतं किमन्यत्कामहैतुकम् || **08** ||

हिन्दी अनुवाद:

वे आसुरी स्वभाव वाले मनुष्य कहा करते हैं कि यह जगत आश्रय-रहित (बिना किसी आधार के), असत्य और बिना ईश्वर के है; केवल स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न हुआ है, इसलिए केवल काम-भोग ही इसका कारण है, इसके अलावा और क्या है?

सरल व्याख्या:

नास्तिक और आसुरी सोच वाले लोग मानते हैं कि इस दुनिया को चलाने वाला कोई ईश्वर या नैतिक नियम नहीं है। वे सोचते हैं कि यह संसार केवल भौतिक और काम-वासना के संयोग से चल रहा है। उनके लिए जीवन का एकमात्र उद्देश्य केवल खाना, पीना और भोग भोगना ही रह जाता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जीवन को केवल भौतिक भोगों तक सीमित मानना और परम सत्ता को नकारना आसुरी सोच का मुख्य आधार है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **16.09**

> एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः |
> प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः || **09** ||

हिन्दी अनुवाद:

इस नास्तिक (गलत) दृष्टिकोण का आश्रय लेकर, जिनकी आत्मा नष्ट हो चुकी है और जिनकी बुद्धि मंद (अल्प) है, वे क्रूर कर्म करने वाले और सबका अहित करने वाले मनुष्य जगत का नाश करने के लिए ही समर्थ होते हैं।

सरल व्याख्या:

जब मनुष्य ईश्वर, धर्म और नैतिकता को पूरी तरह नकार देता है, तो उसकी बुद्धि संकीर्ण हो जाती है। ऐसी सोच रखने वाले लोग अपनी वासनाओं की पूर्ति के लिए क्रूर और हिंसक कर्म करते हैं। वे समाज का भला करने के बजाय पूरी दुनिया के विनाश का कारण बनने लगते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... संकीर्ण और स्वार्थी दृष्टिकोण से किए गए कर्म न केवल स्वयं का नाश करते हैं बल्कि पूरे समाज के लिए विनाशकारी होते हैं।

श्लोक संख्या: **16.10**

> काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः |
> मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः || **10** ||

हिन्दी अनुवाद:

वे कभी न पूरी होने वाली काम-वासनाओं का आश्रय लेकर, दंभ (पाखंड), मान और मद से युक्त होकर, अज्ञानवश मिथ्या (गलत) सिद्धांतों को ग्रहण करके, अशुद्ध आचरण के साथ संसार में विचरते हैं।

सरल व्याख्या:

भगवान कहते हैं कि आसुरी स्वभाव के लोगों की इच्छाएं कभी तृप्त नहीं होतीं। वे एक इच्छा पूरी करते हैं तो दस नई इच्छाएं पैदा हो जाती हैं। वे घमंड, दिखावे और झूठी प्रतिष्ठा में डूबे रहते हैं। वे अज्ञान के कारण गलत धारणाओं को अपना लेते हैं और अपवित्र आचरण करते हुए अपनी पूरी जिंदगी व्यर्थ गँवा देते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... असीम सांसारिक इच्छाएँ और झूठा घमंड मनुष्य को कभी न समाप्त होने वाले अशांति के चक्रव्यूह में फँसा देता है।

Satyanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **16.11**

> चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः |
> कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः || **11** ||

हिन्दी अनुवाद:

जो मृत्युपर्यंत रहने वाली अपार चिंताओं का आश्रय लिए रहते हैं, विषय-भोगों के भोगने को ही परम पुरुषार्थ मानने वाले हैं और 'बस, इतना ही सुख है' ऐसा निश्चय रखने वाले हैं।

सरल व्याख्या:

आसुरी प्रवृत्ति के लोग सांसारिक वस्तुओं और भोगों को ही जीवन का सब कुछ मान लेते हैं। इस कारण वे जीवन भर अनगिनत चिंताओं और तनाव से घिरे रहते हैं, जो केवल मृत्यु के साथ ही समाप्त होती हैं। वे कभी आत्म-शांति का अनुभव नहीं कर पाते।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... केवल सांसारिक भोगों में सुख खोजना अनंत चिंताओं और अशांति को निमंत्रण देना है।

श्लोक संख्या: **16.12**

> आशापाशशतैर्बद्धः कामक्रोधपरायणाः |
> ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् || **12** ||

हिन्दी अनुवाद:

आशा रूपी सैकड़ों पासों (रस्सियों) से बंधे हुए और काम-क्रोध के परायण हुए वे लोग विषय-भोगों के लिए अन्यायपूर्वक धन-संग्रह करने की चेष्टा करते हैं।

सरल व्याख्या:

ऐसे लोग इच्छाओं और उम्मीदों के जाल में जकड़े रहते हैं। जब उनकी इच्छा पूरी नहीं होती, तो वे क्रोधित होते हैं। अपनी काम-वासनाओं और भोगों की पूर्ति के लिए वे सही-गलत का विचार छोड़ देते हैं और अधर्म या अन्याय के रास्ते से धन जुटाने में लग जाते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... असीमित आशाएं और तीव्र वासनाएं मनुष्य को अनैतिक और अन्यायपूर्ण आचरण की ओर धकेलती हैं।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **16.13**

> इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् |
> इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् || **13** ||

हिन्दी अनुवाद:
वे सोचा करते हैं कि—'आज मैंने यह प्राप्त कर लिया है और अब इस मनोरथ को प्राप्त कर लूँगा; मेरे पास इतना धन है और फिर भी यह धन मेरा हो जाएगा।'

सरल व्याख्या:
यहाँ आसुरी सोच वाले व्यक्ति के अहंकार और लालच का सजीव चित्रण है। वह हर समय केवल संग्रह और बढ़ोतरी के जोड़-तोड़ में लगा रहता है—"आज यह मिला, कल वह हड़प लूँगा, मेरे पास इतना है और आगे इतना और हो जाएगा।" वह ईश्वर की कृपा को भूलकर केवल अपनी योजनाओं पर घमंड करता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... केवल धन और संपत्ति के अंतहीन विस्तार की सोच मनुष्य को अंततः पतन की ओर ले जाती है।

श्लोक संख्या: **16.14**

> असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि |
> ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान् सुखी || **14** ||

हिन्दी अनुवाद:
'वह शत्रु मेरे द्वारा मारा गया और उन दूसरे शत्रुओं को भी मैं मार डालूँगा; मैं ही ईश्वर (स्वामी) हूँ, मैं ही भोगी हूँ, मैं ही सिद्ध हूँ, बलवान हूँ और सुखी हूँ।'

सरल व्याख्या:
अहंकार जब चरम पर पहुँचता है, तो व्यक्ति स्वयं को ही ईश्वर मानने लगता है। वह दूसरों को अपना शत्रु समझकर उन्हें नीचा दिखाने या नष्ट करने की योजनाएँ बनाता है। वह सोचता है कि वही सबसे अधिक शक्तिशाली, सफल और जीवन का असली स्वामी है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... स्वयं को सर्वशक्तिमान समझना और दूसरों के प्रति वैर-भाव रखना विनाश का सबसे बड़ा कारण है।

Satyanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **16.15**

> आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया |
> यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः || **15** ||

हिन्दी अनुवाद:
'मैं बड़ा धनी और ऊँचे कुल वाला हूँ; मेरे समान दूसरा कौन है? मैं यज्ञ करूँगा, दान दूँगा और आनंद मनाऊँगा'—इस प्रकार अज्ञान से मोहित रहते हैं।

सरल व्याख्या:
आसुरी स्वभाव का व्यक्ति अपने धन, कुल और सामाजिक स्थिति के घमंड में अंधा हो जाता है। वह धार्मिक कर्म, यज्ञ या दान भी केवल अपने दिखावे और नाम के लिए करता है ताकि लोग उसकी वाह-वाही करें। उसका मूल उद्देश्य केवल अपना अहंकार बढ़ाना होता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... अहंकार और दिखावे के लिए किए गए शुभ कार्य भी अज्ञान और पाखंड की श्रेणी में आते हैं।

श्लोक संख्या: **16.16**

> अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः |
> प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ || **16** ||

हिन्दी अनुवाद:
अनेक प्रकार से भ्रमित चित्त वाले, मोह रूपी जाल में फँसे हुए और विषय-भोगों में अत्यंत आसक्त आसुरी लोग महान अशुद्ध नरक में गिरते हैं।

सरल व्याख्या:
गलत प्राथमिकताओं के कारण ऐसे लोगों का मन कभी शांत नहीं रहता। वे मोह के जाल में बुरी तरह उलझ जाते हैं। केवल शारीरिक और मानसिक भोगों में डूबे रहने के कारण वे अपने जीवन को दुःखों, अशांति और पतन के गर्त में धकेल देते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... विवेकहीनता और अत्यधिक आसक्ति मनुष्य के जीवन को नारकीय और कष्टमयी बना देती है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **16.17**

> आत्मसम्भाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः |
> यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम् || **17** ||

हिन्दी अनुवाद:
अपने-आप को ही श्रेष्ठ मानने वाले, घमंडी, धन और मान के मद में चूर वे लोग केवल नाममात्र के यज्ञों द्वारा ढोंग (दंभ) से, बिना शास्त्र-विधि के पूजा-पाठ करते हैं।

सरल व्याख्या:
जो लोग खुद को सर्वोपरि मानते हैं, वे न तो किसी नियम को मानते हैं और न ही किसी गुरु या शास्त्र की बात सुनते हैं। वे जो भी पूजा, अनुष्ठान या समाज सेवा करते हैं, वह सब केवल अपनी झूठी प्रतिष्ठा और दिखावे के लिए होता है। उसमें न भक्ति होती है और न ही विधि का पालन।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... बिना श्रद्धा और नियम के केवल दिखावे के लिए किए गए धार्मिक कार्य निष्फल रहते हैं।

श्लोक संख्या: **16.18**

> अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः |
> मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः || **18** ||

हिन्दी अनुवाद:
अहंकार, बल, घमंड, काम और क्रोध का आश्रय लेने वाले वे ईर्ष्यालु लोग अपने और दूसरों के शरीर में स्थित मुझ परमात्मा से द्वेष करते हैं।

सरल व्याख्या:
श्रीकृष्ण कहते हैं कि हर प्राणी के भीतर ईश्वर का वास है। लेकिन जो लोग अहंकार, ताकत का नशा, वासना और गुस्से के अधीन होते हैं, वे दूसरों को कष्ट पहुँचाकर वास्तव में उनके भीतर बैठे परमात्मा का ही अनादर और उत्पीड़न करते हैं। वे ईर्ष्या के कारण सत्य का विरोध करते हैं।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... किसी भी जीव को पीड़ा पहुँचाना या उससे द्वेष करना वास्तव में उसके भीतर स्थित परमात्मा से द्वेष करना है।

Satyaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **16.19**

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान् |

क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु || **19** ||

हिन्दी अनुवाद:

उन द्वेष करने वाले, क्रूर, अपवित्र और मनुष्यों में नीच स्वभाव वालों को मैं संसार में बार-बार आसुरी योनियों में ही डालता हूँ।

सरल व्याख्या:

यह कर्म के अटूट सिद्धांत का वर्णन है। जो लोग निरंतर ईर्ष्या, क्रूरता और पाप कर्मों में लगे रहते हैं, उनका चेतना-स्तर इतना गिर जाता है कि वे प्रकृति के नियमानुसार बार-बार वैसी ही अशांत, दुखद और निम्न परिस्थितियों में जन्म लेते हैं।

यह श्लोक हमें बताता है कि... मनुष्य का अपना आचरण और कर्म ही उसकी भावी गति और परिस्थितियों का निर्धारण करते हैं।

श्लोक संख्या: **16.20**

आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि |

मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् || **20** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे कुंतीपुत्र अर्जुन! वे मूर्ख (अज्ञानी) जन्म-जन्मांतर में आसुरी योनियों को प्राप्त होते हुए मुझे न प्राप्त होकर उससे भी अति नीच गति को ही प्राप्त होते हैं।

सरल व्याख्या:

जब मनुष्य अपने दुर्गुणों को सुधारने का प्रयास नहीं करता, तो वह अज्ञान के चक्रव्यूह में फँसता चला जाता है। ईश्वर की ओर ध्यान न देने और केवल बुराइयों में रमे रहने के कारण वह आत्म-कल्याण के मार्ग से पूरी तरह भटक जाता है।

यह श्लोक हमें बताता है कि... यदि समय रहते अपने दोषों को दूर न किया जाए, तो मनुष्य आत्म-विकास के अवसर खो देता है।

Satvaanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **16.21**

> त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः |
> कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् || **21** ||

हिन्दी अनुवाद:

काम (वासना), क्रोध और लोभ—ये तीनों आत्मा का नाश करने वाले (पतन की ओर ले जाने वाले) नरक के तीन द्वार हैं; इसलिए इन तीनों को त्याग देना चाहिए।

सरल व्याख्या:

श्रीकृष्ण सभी बुराइयों के मूल कारणों को संक्षेप में बताते हैं। वे कहते हैं कि काम-वासना, अत्यधिक गुस्सा और लालच ही वे तीन मुख्य द्वार हैं जो मनुष्य की बुद्धि का नाश करते हैं और उसे पतन के गर्त में गिराते हैं। यदि मनुष्य शांति और अपना कल्याण चाहता है, तो उसे इन तीनों का तुरंत त्याग कर देना चाहिए।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... काम, क्रोध और लोभ ही मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं, जिनसे दूर रहकर ही आत्म-कल्याण संभव है।

श्लोक संख्या: **16.22**

> एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः |
> आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् || **22** ||

हिन्दी अनुवाद:

हे कुंतीपुत्र! इन तीनों अंधकार रूपी द्वारों से मुक्त हुआ मनुष्य अपने कल्याण का आचरण करता है और उससे परम गति (परमात्मा) को प्राप्त होता है।

सरल व्याख्या:

भगवान कहते हैं कि जो साधक काम, क्रोध और लोभ रूपी तीनों द्वारों से बचकर निकल जाता है, वह अपने जीवन में शुभ और कल्याणकारी कर्म करने लगता है। ऐसा निष्पाप व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी चेतना को ऊँचा उठाकर परम पद को प्राप्त कर लेता है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... दुर्गुणों से मुक्ति मिलते ही मनुष्य का मार्ग स्वतः ही ईश्वर और परम शांति की ओर प्रशस्त हो जाता है।

Satyanubhuti Ashram

श्लोक संख्या: **16.23**

> यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः |
> न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् || **23** ||

हिन्दी अनुवाद:
जो मनुष्य शास्त्र-विधि को छोड़कर अपनी इच्छा के अनुसार आचरण करता है, वह न तो सिद्धि को प्राप्त होता है, न सुख को और न परम गति को ही प्राप्त होता है।

सरल व्याख्या:
श्रीकृष्ण जीवन के नियमों का महत्व बताते हैं। वे कहते हैं कि जो व्यक्ति धर्म-ग्रंथों और ज्ञानियों द्वारा बताए गए श्रेष्ठ नियमों को नकार कर केवल अपने मनमौजी स्वभाव और वासनाओं के अनुसार चलता है, उसे जीवन में न तो वास्तविक सफलता (सिद्धि) मिलती है, न शांति मिलती है और न ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... मनमानी जीवन शैली की जगह शास्त्र और विवेकपूर्ण मर्यादाओं का पालन करना ही सच्ची उन्नति का आधार है।

श्लोक संख्या: **16.24**

> तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ |
> ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि || **24** ||

हिन्दी अनुवाद:
इसलिए तुम्हारे लिए कर्तव्य और अकर्तव्य (क्या करने योग्य है और क्या नहीं) की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण है। ऐसा जानकर तुम्हें शास्त्र-विधि से नियत किए गए कर्मों को ही करना चाहिए।

सरल व्याख्या:
यह इस अध्याय का अंतिम श्लोक है। भगवान अर्जुन से कहते हैं कि जीवन में जब भी यह भ्रम उत्पन्न हो कि क्या करना चाहिए और क्या नहीं, तो तुम्हें शास्त्रों और महान आचार्यों द्वारा बताए गए धर्म-मार्ग का ही अनुसरण करना चाहिए। मर्यादा में रहकर अपने कर्तव्यों का पालन करना ही सर्वोत्तम मार्ग है।

> यह श्लोक हमें बताता है कि... जीवन के कठिन मोड़ पर कर्तव्य का सही निर्णय लेने के लिए शास्त्र और धर्म की मर्यादा ही हमारी सच्ची मार्गदर्शक है।

Satyanubhuti Ashram

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे

दैवासुरसम्पद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः || **16** ||

Satyaanubhuti Ashram